RESEARCH PAPER | Social Science | Volume : 5 | Issue : 9 | September 2015 | ISSN - 2249-555X

आदविासी लोककथाओं में लोक विश्वास
Aadivasi Lok kathaao me Lok Vishvaas

KEYWORDS

Sushil kumar shelly

लोक कथाएं लोक साहित्य का अभिन्न अंग होती हैं, जिन का संबंध लोक से जुड़ी वाचिक परंपरा से होता है। लोक संस्कृति की संरक्षिका लोक कथाएँ ही होती हैं। यह लोक भाषा अथवा बोली में परम्परा से वाचिक रूप से चली आतीं प्रचलित लोक कहानियाँ ही होती हैं जो सदियों से एक पीढी से दूसरी और दूसरी से तीसरी पीढ़ी के सतत् क्रम में प्रवाहित होती चली आ रही हैं। इन में लोक मानस की भावनाएँ, दुख-सुख, आशा-निराशा, आस्था, विश्वास, ,परंपराएं, रीति-रिवाज और प्रथाएं निहित होती हैं । लोक विश्वास इन लोक कथाओं के अभिन्न अंग हैं। इन्हीं विश्वासों पर लोक जीवन आश्रित होता है। लोक जीवन में अनेक विषयों से संबंधित लोक विश्वास पाए जाते हैं जैसे -तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका, भूत-प्रेत, देवी-देवताओं की शक्तियां, शकुन-अपशकुन, प्राकृतिक चिह्न आदि ।

'आदिवासी' शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है- मूल निवासी। पुरातन लेखों में आदिवासियों को अत्विका और वनवासी भी कहा गया है। महात्मा गांधी ने इन्हें गिरिजन कहकर पुकारा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में आदिवासियों को अनुसूचित जनजातियों के रूप में मान्यता दी गई है। अक्सर इन्हें अनुसूचित जातियों के साथ एक ही श्रेणी 'अनुसूचित जातियों और जनजातियों' में रखा जाता है। आदिवासी मुख्य रूप से भारतीय राज्यों उडीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक हैं, जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में बहुसंख्यक हैं ।

आदिवासी लोककथाओं में लोक विश्वास

भारत में अनेक आदिवासी जातियां अपनी मौलिक मान्यताओं, रीतिरिवाज के साथ जीवनयापन कर रही हैं। इन जातियों के पास अपना प्रचलित वाचिक लोक साहित्य है, जिन में उनकी संस्कृति, सामाजिक संरचना, मान्यताएं, रीतिरिवाज, विश्वास सहज रूप में विद्यमान हैं। अपने इस वाचिक परम्परागत साहित्य को आदिवासी पुरखा साहित्य कहते हैं। इन जनजातियों में लोक कथाओं का जो रूप आज भी विद्यमान है, वह लोक कथाओं के उस आरम्भिक रूप के सर्वाधिक निकट है जो विचार सम्प्रेषण की आरम्भिक प्रक्रिया के समय था। इनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है, इनके माध्यम से अनुभवों का आदान प्रदान, मानव शिक्षा, सद्कर्म का महत्व निहित है ।इनमें मनुष्य के जन्म, पृथ्वी के निर्माण, देवता के व्यावहार ,भूत -प्रेत, राक्षस आदि से संबंधित विश्वास भी निहित हैं ।

1, सृष्टि के विकास के संबंध में लोक विश्वास

विभिन्ना आदिवासी जातियों में सृष्टि के निर्माण के संबंध में विभिन्न-विभिन्न विश्वास हैं। बंगाल की भुइया जनजाति की लोक कथा के अनुसार- पहले पृथ्वी पर महासागर के अतिरिक्त कुछ नहीं था। चारों तरफ जल ही जल देख ईश्वर ने एक पुरुष और एक स्त्री को उत्पन्न किया। लेकिन उन के चलने से पृथ्वी कांपने लगती थी । तब ईश्वर ने एक राई बाघ और एक राई बाघिन को उत्पन्न कर आदेश दिया कि मनुष्य जोडे को मारकर उनका रक्त और मास चारों कोनों में डाल दो ।उन्होंने ऐसा ही किया। तब पुरुष (परिहार) की सात अस्थियों से सात चट्टानें, पैरों से विशाल पेड़, अन्य अस्थियों से पत्थर, सिर से सूर्य और सीने से चंद्रमा बना। इस प्रकार एक सुन्दर सृष्टि की रचना हुई। अंत में एक पुरुष स्त्री जोडा उत्पन कर ईश्वर ने उन्हें परस्पर संसर्ग से नवीन जोडों को उत्पन्न करने का अधिकार दिया (पृ. 246)। उरांव जो मूलतः द्रवीडियन परिवार के हैं तथा पश्चिम बंगाल में निवास करते हैं, में प्रचलित लोक कथा के अनुसार परमात्मा धरमेस मानव संसार बसाने के लिए पृथ्वी का सृजन किया। उस समय पृथ्वी महासागर में तैरती थी। तब उसने अपनी पत्नी पार्वती के कहने पर इसे कछुए की पीठ पर रखा और केकड़े को कछुए के पास नियुक्त कर दिया ता जो वह उसे अपने हाथों से जकडे रखे। यद्यपि कभी कभार कछुआ थककर थोड़ी बहुत चेष्टाएं करता है तो भूकम्प आता है।(पृ.318) कुछ ऐऐसी ही कथा मध्यप्रदेश की गोण्डो की उपजाति अगरिया में भी प्रचलित है, जिसके अनुसार परमात्मा ने सृष्टि बनाई तो वह अस्थिर थी। तब उसने दो मनुष्य बनाए बैगा और अगरिया जिन्होंने उसे स्थिर किया और मानव जाति का विकास किया ।(पृ. 325) इन जातियों में सृष्टि के विकास के संबंध में बहुत कम अंतर है - पृथ्वी का जल मग्न होना, अस्थिर होना, फिर स्थिर होना , फिर विनाश और फिर पुनः सृजन सभी लोक कथाओं में विद्यमान हैं ।

2, मनुष्यों के जन्म के संबंध में

सृष्टि रचना के बाद पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति और मानव समाज की वृद्धि के संबंध में अलग अलग धर्मों में अलग अलग विश्वास हैं। जिनके संबंध में हमें पुराणों, ग्रथों में कथाएं मिलती हैं। कुछ ऐसी ही मान्यताएं हमें आदिवासी लोक कथाओं में मिलती हैं। आदिवासी अपने ईष्ट को मानव की उत्पत्ति करने वाला मानते हैं। अंडमानी जनजातीय समूहों के अनुसार पुलुगा देवता से बडा कोई देवता नहीं है। उसने अंडमान में माईया डुकू को पैदा किया। माईया डुकू अंडमान का आरम्भिक पुरुष था ।(पृ. 94) बैगा जनजाति के अनुसार भगवान ने सृष्टि रचना के बाद नांगा बैगा और नांगा बैगिन को पृथ्वी पर भेजा। दोनों के एक दूसरे को छूने से नांगा संतति का जन्म हुआ। इस लिए नांगा बैगा और नांगा बैगिन संसार के पितृदेव और मातृदेवी हैं ।(पृ. 169) इसी प्रकार भइया (पश्चिम बंगाल) और जुआंग जनजाति परिहार और बरमनी को सृष्टि के आदिम स्त्री पुरुष मानते हैं, जिन्हें परमात्मा ने उत्पन्न किया । खरिया (रांची) और लखेर (मिजोरम) जनजातियां परमात्मा पोनोमोसोर और खंजगपा के हाथों सृष्टि के विनाश के बाद एक भाई बहन के बच जाने और उनके परस्पर संसर्ग से मानव जाति का विकास मानते हैं। खरिया समुदाय के अनुसार परमात्मा पोनोमोसोर ने संसार बनाया तथा स्त्री पुरुष की मूर्ति बनाकर बरगद के पेड़ के नीचे रख दी । बरगद के दूध से वह जीवित हुई। उस युगल ने अपने कृत्यों से परमात्मा पोनोमोसोर को नाराज कर दिया तथा परमात्मा ने सृष्टि का विनाश किया (पृ.-370) मानव जाति की सृष्टि पर उत्पत्ति चाहे जैसे भी हुई हो लेकिन आदिवासी लोक कथाओं से हमें उनकी मान्यताओं का बोध जरूर होता है ।

3, गोदना से संबंधित लोक विश्वास

गोदना आदिवासी समुदायों में बहु प्रचलित प्रथा है। जिसके साथ उनकी पहचान जुडी है। गोदना जहां व्यक्ति से व्यक्ति की अलग पहचान से संबंधित है, वहीं यह समुदायों की अलग अलग पहचान का भी चिह्न है। जिस में आदिवासी जुडी बूटियों के पक्के रंग से सूई के माध्यम से अपने शरीर के किसी भाग पर बेल बूटे आदि बनाते हैं। सभी आदिवासियों में इस प्रथा के आरम्भ से संबंधित एक जैसी मान्यताएं प्रचलित हैं। भाडिया (मध्यप्रदेश के जबलपुर) , कोरकू (मध्यप्रदेश के वनप्रांत सतपुड़ा) और भारिया समुदाय में यह कथा यमराज से संबंधित है। पृथ्वी पर स्त्री पुरुष की अलग अलग पहचान करना कठिन था। मृत्यु के बाद यमराज को जीवों की पहचान में बहुत कठिनाई आती थी ।तब उस ने अलग अलग माध्यमों से जीवों को अपने शरीर पर गोदना गुदवाने का महत्व बताया। इसी

Volume : 5 | Issue : 9 | September 2015 | ISSN - 2249-555X

लिए लगभग सभी समुदायों में मान्यता है कि मृत्यु के बाद शरीर भले ही यहीं रह जाए किन्तु गोदना आत्मा के साथ यम के पास तक जाता है और यमराज को व्यक्ति की पहचान में सहायता करता है।

4, अलौकिक शक्तियों के संबंध में लोक विश्वास

आदिवासियों की धारणा है कि परमात्मा अपने भलेपन के तहत से पशु पक्षियों के माध्यम से बात करता है। 'हंसराज घोड़ा और मुखबोलता तोता' (मुण्डा लोककथा) कथा राजकुमार की सहायता विभिन्न पशु पक्षी ही करते हैं। (पृ 14) आदिवासी लोक मुख्य रूप से प्रकृति पूजक हैं। वह प्राकृतिक तत्वों को देव रूप में मानते हैं। सूर्य, नदी, पर्वत, वृक्ष, वन, पशु आदि की वह पूजा करते हैं। प्रकृति के विनाशकारी रूप से रक्षा के प्रयोजन ने उनमें प्रकृति पूजा संबंधी लोक विश्वासों को समय समय पर उद्भव किया। भुमाती देवी, ग्राम देवता, वन देवता आदि की पूजा यह इसी उद्देश्य से करते हैं।

5, जादू टोना और भूत प्रेतों से संबंधित लोक विश्वास

आदिवासी लोक जादू टोना, भूत प्रेत में विश्वास रखते हैं। बैगा जाति में झाड फूंक करने वाले को 'गुनिया' तथा कोरकू जनजाति में झाड फूंक करने वाले पुरुष को 'पडियार' तथा स्त्री को 'भगटो - डुकरी' कहते हैं। गोण्ड जनजातियों में 'बैगा' और 'भूमका' से झाड फूंक करवाते हैं। लखेर जनजातियों का विश्वास है कि देवता झेंग दुष्ट आत्माओं से रक्षा करते हैं।

6, कथानक रूढियां

आदिवासी लोक कथाओं में हमें कई ऐसी कथानक रूढियां मिलती हैं जिनका आधार सिर्फ लोक विश्वास है। कथाओं में यह रूढियां बीना किसी तर्क के अपने सहज सरल रूप में चली आ रही हैं। इन कथानक रूढियों में जहां चमत्कार है वहीं यह कथाओं में रोचकता प्रदान करतीं आदिवासी संस्कृति और प्राकृतिक जीवन से हमारा परिचय कराती हैं। 'केले का पेड़ और गेंदे का फूल' (बिरहोर लोककथा) में एक साधु राजा को कहता है " हे राजन् ! तुम अपनी ढाल और तलवार लेकर आम के उपवन में जाओ। अपनी तलवार से आम तोडकर उन्हें अपनी ढाल पर रोक लेना ।जितने आम तुम्हारी ढाल पर आ जाएंगे उन्हें तुम अपने महल में लेजा करक अपनी रानियों को खिला देना ।इससे तुम्हें संतान की प्राप्ति होगी।" यह एक लोक धारणा है जो भारतीय गांवों में 'झोली में फल डालने' के नाम से प्रसिद्ध है। लंगडे भूत का पीपल के पेड़ के नीचे रहना, भूत का सुंदर, स्स्वस्थ युवक का वेश धारण कर लेना ,(लंगड़ा भूत- दोरला लोककथा) हिरणी दवारा राजा का मूत्र मिला हुआ गड्ढे का पानी पी लेने से गर्भवती हो जाना (हिरणी का छउआ - मुण्डा लोककथा), राजा के स्वप्न में हंस के समान सुंदर श्वेत रंग का घोड़ा और मनुष्यों की बोली बोलता तोता दिखाई देना (हंस राजा तोता और मुखबोलता तोता -मुण्डा लोककथा) ऐसी ही अनेकों कथानक रूढियां जिनका संबंध परियों, भूत -प्रेत, देवी -देवताओं, शाप, पशु पक्षी, से है आदिवासी लोक कथाओं का श्रंगार हैं।

निष्कर्ष -

आदिवासी लोक कथाओं में आदिवासी सामाजिक संरचना, धार्मिक मान्यताओं, रीतिरिवाज, संस्कृति और उनकी सम्पूर्ण दिनचर्या देखने को मिलती है। यह रचनाएँ केवल मनोरंजन के उद्देश्यसे निर्मित नही हैं यह अपनी सहजाभिव्यक्ति और भलेपन के साथ मानव को प्रकृति का सान्निध्य प्रदान कर उसे सत् कर्म की शिक्षा देती हैं। इन के केंद्र में वो नैतिक मूल्य हैं जिनसे हम शून्य हो गए हैं। आदिवासियों की संस्कृति से अनभिज्ञ हम उन्हें विचित्र दृष्टि से देखते हैं और उन्हें अपने से भिन्न मानते हैं। जिसका मुख्य कारण आदिवासी पुरखा साहित्य के प्रति हमारा अज्ञान है।

REFERENCE

1 शरद सिंह, भारत के आदिवासी क्षेत्रों की लोककथाएं ,नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली -110070, चौथा संसंस्कर 2013 । | 2 सं. रमणिका गुप्ता, आदिवासी साहित्य यात्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008 । |